SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

स्वयं वित्त पोषित,
एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

संयोजक
हिंदी विभाग

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैंम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

संलग्न
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.शंकर पजई
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सह संयोजक

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Indexed

Indexed

IMPACT FACTOR
6.021
iijif

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

ISSN 2319 9318

38) डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन
प्रा. तुकाराम वसराम आडे, हिंगोली ||130

39) सरदार पूर्णसिंह का निबंध 'मजदूरी और प्रेम' में कृषक चेतना
प्रा. घन पी. के., जि. हिंगोली ||132

40) कृषक की संवेदनाओं से जुडी बरखा शर्मा की कहानी: हत्या
डॉ. पजई एस. आर., जि. हिंगोली ||135

41) सिनेमा, साहित्य और किसान
प्रा.डॉ. विजय वाघ, जि. हिंगोली ||137

42) कृषक दरिद्रीकरण की शोक गाथा गोदान
प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव, जि. नांदेड ||139

43) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान जीवन का यथार्थ
प्रा.डॉ. दीपक विनायकराव पवार, जि. नांदेड (महाराष्ट्र) ||143

44) हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक चेतना
डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे, परभणी(महाराष्ट्र) ||145

45) धूमिल के काव्य में व्यक्त किसान जीवन संघर्ष
डॉ. मुकुंद कवडे, नांदेड (महाराष्ट्र) ||148

46) मैत्रेयी पुष्पा कृत 'चाक' उपन्यास में कृषक व्यवस्था
डॉ. अर्चना पत्की, जि. परभणी ||150

47) हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन
डॉ. प्रवीण देशमुख, बार्शिटाकली ||153

48) स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में कृषक जीवन: बदलता परिवेश
डॉ. कमलकिशोर एस. गुप्ता, नागपुर ||156

49) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
डॉ. राम सदाशिव बडे, जि. बीड ||159

50) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में कृषक चेतना
डॉ. वडचकर एस. ए., सोनपेठ ||163

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

है, जब गोबर शहर से गांव लौटकर आता है तो सभी लोग उसके साथ अपने बच्चों को भेजने के लिए लालायित हो जाते है। खेती के अलाभकर होने और ग्रामीण जीवन में भी नकद रूपये पैसे की लेनदेन बढने से नौकरी का यह रूतबा हासिल हुआ था अन्यथा तो घाघ के मुताबिक उत्तम खेती मध्यम बान निषिध्द चाकरी भीख निदान था।

कुल मिलाकर प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में उपनिवेशवादी नीतियों से बरबाद होते भारतीय किसानी जीवन और इसके लिए जिम्मेदार ताकतों की जो पहचान आज से ८५ बरस पहले की थी वह आज भी हमें इसीलिए आकर्षित करती है कि हालत में फर्क नहीं आया है बल्कि किसान का दरिद्रीकरण तेज ही हुआ है और मिलों की जगह आज उसे लूटने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आ गई हैं।

संदर्भ:—

०१. प्रेमचंद, कुछ विचार, डायमंड केट बुक्स, नई दिल्ली, २०११,पृष्ठ संख्या—४५
०२.प्रेमचंद, कुछ विचार, डायमंड केट बुक्स, नई दिल्ली, २०११,पृष्ठ संख्या—०९—१०
०३. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं.२०४७ वि.पृ.२९२
०४. गोदान, मुंशी प्रेमचंद,पृ.सं ९७
०५. गोदान, मुंशी प्रेमचंद,पृ.सं ९८
०६. गोदान, मुंशी प्रेमचंद,पृ.सं १२२
०७. प्रेमचंद और उनका युग, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,१९९३.

❑❑❑

43

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान जीवन का यथार्थ

प्रा.डॉ. दीपक विनायकराव पवार
सहाय्यक प्राध्यापक,
दिगंबरराव बिंदू महाविद्यालय, भोकर, जि. नांदेड (महाराष्ट्र)

****

प्राचीन काल से लेकर आज तक की समयावधि के दौराण हम भारतीय समाज एवं भारतीय संस्कृति की आधारशीला को समृध्द पाते हैं। किंतु सामाजिक परिवर्तन एवं परिवर्धन की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को संभालकर रखनेवाले समुदाय को सदैव कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। विनाशकारी, अमानवीय ताकतों द्वारा उसे सदैव दो हाथ बड़े करने पड़े। उसका यह संघर्ष उसके जीवित होने का प्रमाण है। समसामयिक परिस्थितियों के 'धर्म', 'संस्कृति', अपनी 'अस्मिता'-'पहचान', 'अस्तित्व', इत्यादी महत्त्वपूर्ण शब्दों के अर्थों के खोज में तथा इन शब्दावलियों के बिच स्वयं को देखते है तो हम अपनी मूल समस्याओं से दूर जाते हैं। इसका मतलब कतई यह नहीं है कि जीवन में उपरोक्त शब्दों का महत्त्व नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन की वास्तविकता, विशेष रुप से अन्नदाता किसान एवं स्त्री की स्थिति से वाकिफ़ होकर भी हमारे क्रिया-कलाप बापु के तीन बंदरों की तरह हो गए हैं। आज हम और हमारी सरकारे न कुछ देखने की स्थिति में है, न कुछ सूनने की और न ही कुछ कहने-करने की। वह केवल घोषणाएँ करती हैं। अपने राग-रंग एवं आलापचारी में हमारी धार्मीक पहचान नागरिकता को साबीत करने में जुटी है। इस परिस्थिति में कितनी ही विकट अवस्था में किसान गुजर रहा हो वे उस तड़प को कैसे समझ सकती है।

जो सरकारे किसी भू-विशेष को महीनों तक अपने ही घर में कैद करने की कवायद कर सकती है, वह सरकार वहाँ के (किसी भी प्रदेश के) किसान की वेदना से आहत कब होगी ? वह दुखी-पिड़ीत के प्रति संवेदनशील कब होगी ? इस प्रकार कई प्रश्न है जिनपर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। सामान्य युवक को जीवनयापन करने के लिए सबसे जरुरी और आवश्यक है

रोटी, कपड़ा और मकान जब इन चीजों की पूर्ती नहीं होती तब वह निराशा के गहन अंधकार में डूब जाता है। आज किसानों की भी यही स्थिति है। अपना रोजमर्रा की जिंदगी जीने के लिए एवं पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए उसे जीवनभर संघर्ष करना पड़ता है। सरकार की संपूर्ण नीतियाँ प्रत्यक्ष्य रूप से उसके पक्ष में दिखाई पड़ती है किंतु अप्रत्यक्ष्य रूप से वह भी एक षड्यंत्र प्रतित होती है। क्योंकि उन नीतियों में एक ओर सहुलियत है तो दूसरी ओर वह लचीलापण है जो किसान को संघर्ष करने पर बाध्य करता है। लोकतंत्र का सूर्योदय आज 70 वर्ष के पश्चात भी उसके जीवन में रोशनी नहीं ला पाया। उसके जीवन में परिवर्तन नही ला सका। कहने को तो कई परिवर्तन हुए, जीवन पध्दति के साथ कार्य शैली एवं संसाधनों का विकास हुआ। चीजे आसानी से उपलब्ध होने लगी बावजूद इसके किसानों के जीवन में खासा परिवर्तन नहीं हुआ। आज भी किसान ज्यों-कि-त्यों अवस्था मे हैं। उनके समक्ष कठिनाईयोंने विकराल स्वरूप धर लिया है। उन कठिनाईयों का सामना करना और प्रकृति की मार को झेलना किसान के लिए कष्टप्रद है। वह संघर्ष करते-करते दम तोड रहा है।

साहित्य सामाजिक प्रक्रिया का यथार्थ दर्शन माना जाता है। इस नाते वह सामान्य जनों को स्त्री, दुखी, पीड़ित व्यक्ति के साथ-साथ किसान जीवन-दर्शन को भी प्रस्तुत करता है। इसकी प्रचीती हमें मध्यकालीन साहित्य में भी दिखाई देती है। उदाहरण के लिए तुलसीदास का काव्य ही देखिए उन्होंने किसान जीवन संबंधित तथ्यों को प्रथम देकर अपनी काव्य कला में पिरोया है। तुलसी ने जिस जीविका विहिन समाज का दर्शन कराया है उस जीवन की प्रचीती आज भी देखने को मिती है अपितु उससे बदतर अवस्थामें आज का किसान दिखाई पड़ता है। आधुनिक काल की कई भारतीय भाषाओं में कृषक जीवन से संबंधित तथ्यों की यथार्थ रुप में व्यक्त किया है। प्रेमचंद, फकिरमोहन सेनापति कृमश: हिंदी और उर्दु में अपने उपन्यास के माध्यम से किसान जीवन के महाकाव्य को, दर्शन को कलात्मक रूप में पिरोते हैं। 'गोदान' के रायसहाब आज नहीं है जो अप्रत्यक्ष्य रूप से होरी का शोषण करते हैं। उनका स्थान अब बड़ी-बड़ी कार्पोरेट कंपनियों ने लिया है। कंपनियों ने अपने फायदों के लिए परंपरागत बिज को नष्ट करके संकरित बिज तैयार किया है। बिज में इस प्रकार से जेनेरिक परिवर्तन किया है कि फसल विभिन्न रोगों से ग्रासित होकर मर जाती है। विभिन्न प्रकार के रोगों से बचाने के लिए उन्हीं कंपनियों द्वारा दी जानेवाली महंगी दवाओं का इस्तेमाल फसल बचाने के लिए करना पड़ता है। कंपनियों की नीतियों की किसान को दोहरी मार झेलनी पड़ी एक तो जमीन बंजर हो रही है दूसरी आर्थिक मार सहन करनी पड़ रही है। परिणामत: वह कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने के लिए बाध्य हुआ है। कंपनियों एवं सरकारी षड्यंत्रों के बिच फंसा किसान कोल्हु के बैल की तरह अपने ही जाल में गोल-गोल घूम रहा है। केदारनाथ अग्रवाल कृषक जीवन के कवि कहे जाते हैं, उन्होंने अपनी कविताओं में किसान जीवन से संबंधित भिन्न-भिन्न बिंबों को उद्घाटित किया है। इस प्रक्रिया में उन्होंने किसान जीवन की केवल दुखद स्थिति को ही उभारा नहीं बल्की उसकेजीवन के सभी राग-रंगों को दर्शाया है। उदाहरण के लिए उनके कविता की कुछ पंक्तियाँ देख सकते हैं।

"यह उधार खाते का जीवन
बढ़े ब्याज का बोझा लादे
रामराज्य की नई सड़कपर
पाँव उठाए डगमग चलता
कागज के कर्जे का कौरव
पाँच हाथ की लाठी ताने
बीच सड़क में राह रोककर
इंसानों को दंडित करता
सच कहता हूँ यह हालत है।"

संदर्भ ग्रंथ :-

1) डॉ. विनय मोहन शर्मा - हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास
2) डॉ. ज्ञानचंद्र गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और ग्राम चेतना
3) डॉ. हेमराज निर्मल - हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग
4) श्री. राजेश्वर गरू - प्रेमचंद्र एक अध्ययन
5) प्रेमचंद - गोदान
6) डॉ. ज्ञानचन्द्र गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना

❑❑❑